जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

21 नवम्बर, 2024

प्रेस विज्ञप्ति

प्रवासन और भारतीय प्रवासियों पर जामिया मिल्लिया इस्लामिया में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने भारत की वैश्विक छवि पर प्रकाश डाला

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के पश्चिम एशियाई अध्ययन केंद्र में 18-19 नवंबर, 2024 को आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, प्रवासन और भारतीय प्रवासियों की बदलती गतिशीलता: भारत की वैश्विक छवि का लाभ उठाना, प्रवासन, भारतीय प्रवासियों और विश्व मंच पर भारत के बढ़ते प्रभाव से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों का पता लगाने के लिए विशेषज्ञों, विद्वानों और नीति निर्माताओं के एक विविध समूह को एक मंच पर लाया। सम्मेलन का आयोजन प्रो. अनीसुर रहमान ने किया था और इसे भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद , जामिया मिल्लिया इस्लामिया और आई सी डब्ल्यू द्वारा प्रायोजित किया गया था।

सम्मेलन में भारत और विदेशों के 50 से अधिक संस्थानों से 180 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें कनाडा, यूएसए, यूके, बांग्लादेश और नीदरलैंड शामिल हैं। इस कार्यक्रम में 23 तकनीकी सत्र, तीन ऑनलाइन सत्र और एक पूर्ण सत्र शामिल थे जिसमें प्रवास, सांस्कृतिक पहचान और भारत की कूटनीतिक और आर्थिक रणनीतियों से संबंधित प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई।

उद्‌घाटन सत्र: वैचारिक नेतृत्व हेतु मंच

सम्मेलन की शुरुआत प्रो. हेमायुन अख्तर नाज़मी के स्वागत भाषण से हुई जिन्होंने वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान को आकार देने में प्रवास के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला। संयोजक प्रो. अनीसुर रहमान ने विस्तारपूर्वक बताया कि किस प्रकार प्रवास ने भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रभावित किया है और इसकी वैश्विक छवि को आकार प्रदान किया है ।

अपने बीज वक्तव्य में डॉ. हेमराज रामदथ ने भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क बनाने में भारतीय प्रवासियों की शक्ति के बारे में चर्चा की। उन्होंने श्रम प्रवास से भारत की वैश्विक स्थिति में योगदान देने वाले अत्यधिक कुशल, उद्यमी समुदाय में बदलाव पर बल दिया।

मुख्य अतिथि नीदरलैंड के प्रो. मोहन कुमार गौतम ने भारतीय प्रवासियों के बढ़ते प्रभाव को रेखांकित किया वह भी खास तौर पर कुशल प्रवास के बारे में और युवा पीढ़ी को भारत और उनके मेजबान देशों में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाने का आह्वान किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सामाजिक विज्ञान के डीन प्रो. मुस्लिम खान ने एक विचारोत्तेजक व्यख्यान दिया जिसमें भारत के ऐतिहासिक प्रवास और प्राचीन व्यापार मार्गों से लेकर समकालीन वैश्विक रुझानों तक के इसके पैटर्न के बारे में पता लगाया गया। कुलपति के कार्याधिकारी डॉ. सत्य प्रकाश ने समकालीन साहित्य में परिलक्षित प्रवास की भावनात्मक और बौद्धिक जटिलताओं के बारे में चर्चा की।

पूर्व कुलपति प्रो. एस.पी. सिंह ने युवाओं को उभरते वैश्विक मुद्दों, विशेष रूप से प्रवासी समुदाय के एकीकरण और राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

मुख्य सत्र और निष्कर्ष:

1) प्रवास पैटर्न और रुझान: वैश्विक परिप्रेक्ष्य विशेषज्ञों ने विशेष रूप से ग्लोबल दक्षिण से ग्लोबल उत्तर की ओर बदलते प्रवास पैटर्न का विश्लेषण किया, जिसमें भारतीय प्रवास के बढ़ते विविधीकरण और क्षेत्रीय अस्थिरता से उत्पन्न चुनौतियों पर ध्यान दिया गया।

2) भारतीय प्रवासी और इसका वैश्विक प्रभाव: इसमें व्यापार, शिक्षा और संस्कृति में भारतीय प्रवासियों के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला गया, विशेष रूप से श्रम प्रवास से उच्च शिक्षित, उद्यमी समुदाय में बदलाव के बारे में ।

3) भारत की वैश्विक छवि का लाभ उठाना: चुनौतियाँ और अवसर : इस सत्र में इस बारे में पता लगाया गया कि भारत राजनयिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए अपने प्रवासियों की शक्ति का उपयोग किस प्रकार कर सकता है। विशेषज्ञों ने प्रवासी भारतीय दिवस और ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया योजना जैसी सरकारी पहलों के बारे में चर्चा की।

4) प्रवास और सांस्कृतिक पहचान: प्रवासी समुदाय के बीच सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण, विशेष रूप से विरासत और आत्मसात के बीच तनाव को दूर करने वाली युवा पीढ़ियों के बीच इसके बारे में मुख्य रूप से बल दिया गया ।

5) प्रवास और रिवर्स माइग्रेशन के बदलते पैटर्न: शिक्षा, लैंगिकता और प्रवास पर आधारित सत्रों ने प्रवास और रिवर्स माइग्रेशन के बदलते पैटर्न और समकालीन समय में सरकार द्वारा ऐसे मुद्दों को संबोधित करने के तरीके पर बल दिया।

धन प्रेषण, परोपकार और सामाजिक विकास पर गोलमेज सम्मेलन

महत्वपूर्ण गोलमेज सम्मेलन में भारत में सामाजिक विकास को समर्थन देने में धन प्रेषण और प्रवासी परोपकार की भूमिका के बारे में चर्चा की गई। प्रो. रक्षंदा एफ. फाजली ने प्रभाव-संचालित परोपकारी निवेश की ओर बदलाव पर बल दिया, जबकि प्रो. अंबा पांडे ने ग्रामीण भारत में गरीबी उन्मूलन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में धन प्रेषण की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में चर्चा की । डॉ. महालिंगम एम ने धन प्रेषण को प्रभावित करने वाले नीतिगत ढाँचों और डिजिटल वित्तीय प्रौद्योगिकियों की बढ़ती भूमिका के बारे में चर्चा की ।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सम्मेलन का समापन एचआरडीसी के सम्मेलन कक्ष (एमएमटीटीसी) में आयोजित समापन सत्र के साथ हुआ। केंद्र के निदेशक प्रो. शाहिद जमाल अंसारी ने स्वागत भाषण दिया और तदुपरान्त विशिष्ट अतिथियों को पौधे और स्मृति चिन्ह भेंट किए गए।

पश्चिम एशियाई अध्ययन केंद्र के प्रो. सेबेस्टियन ने डॉ. अतीकुर रहमान द्वारा तैयार सम्मेलन रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें परिणामों और सिफारिशों का सारांश दिया गया। जेएनयू के प्रो. एके महापात्रा ने एक व्यापक भाषण दिया, जिसमें विद्वानों की अगली पीढ़ी से उभरते प्रवास और प्रवासी मुद्दों पर अकादमिक चर्चा में

अधिक गहराई से शामिल होने का आग्रह किया। एएमयू के पूर्व कुलपति प्रो. मुहम्मद गुलरेज़ ने भारत की विदेश नीति को आकार देने में भारतीय प्रवासियों के महत्व के बारे में चर्चा की ।

सत्र का समापन प्रो अनीसुर रहमान के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया के माननीय कुलपति प्रो मजहर आसिफ और माननीय कुलसचिव प्रो मोहम्मद महताब आलम रिजवी के साथ-साथ आयोजन समिति, संकाय सदस्यों, विद्वानों और कर्मचारियों के प्रति उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

मुख्य सिफारिशें

सम्मेलन का समापन भारत के अपने प्रवासी समुदाय के साथ संबंध को मजबूत करने के लिए कई प्रमुख सिफारिशों के साथ हुआ:

- नीति विकास: प्रवासी समुदायों का समर्थन करने और मजबूत प्रवासी संबंध को सुविधाजनक बनाने के लिए समावेशी नीतियों की वकालत करें।

- प्रवासी जुड़ाव: प्रवासी समुदाय की उद्यमशीलता और कुशल प्रकृति का लाभ उठाकर कूटनीतिक और व्यावसायिक संबंधों को बढ़ावा दें।

- शिक्षा और कौशल विकास: प्रवासियों की रोजगार क्षमता बढ़ाने और उन्हें वैश्विक बाजारों के अनुकूल बनाने में सहायता करने के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों को प्राथमिकता दें।

- अगली पीढ़ी पर ध्यान केंद्रित करें: युवा प्रवासी सदस्यों को भारत की सांस्कृतिक और विकासात्मक पहलों से जोड़ने के लिए पहल करें।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया